13 मार्च, 2010 को कारला–महाराष्ट्र में आयोजित हो रहे राष्ट्रीय चिंतन बैठक में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शरद पवार द्वारा उद्घाटन भाषण

माननीय अतिथिगण, प्रतिनिधि गण, देवियो और सज्जनों!

मैं अपनी पार्टी की इस राष्ट्रीय बैठक में आप सभी का हार्दिक स्वागत करता हूँ, जहां पर हम अगले दो दिनों तक राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के वर्तमान राजनीतिक एवं संगठनात्मक मामलों पर चर्चा और विचारमंथन करेंगे। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य तथा अपनी खामियों और खूबियों के सही विश्लेषण से हम भावी चुनौतियों को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे और मुझे विश्वास है कि यह बैठक एक भावी दृष्टिकोण पत्र के साथ समाप्त होगी, जो पार्टी को भविष्य में अपना आधार और अधिक सुदृढ़ बनाने तथा अपने दृष्टिकोण और प्रभाव को नवीन बनाने में मार्गदर्शन देगा। इस बैठक के प्रतिनिधि बारीकी से चुने गए हैं और पहली बार कोई राजनीति पार्टी इतने गहन सत्र का आयोजन कर रही है, जिसमें इसके सभी राष्ट्रीय और राज्य के कार्यकर्ता, इसके मंत्रीगण, संसद सदस्य और विधायक तथा इसके सभी प्रमुख संगठनों के अधिकारी भाग ले रहे हैं। पार्टी में होने वाली इस लोकतांत्रिक चर्चा से हमें लोगों की अपेक्षाओं के

अनुरूप एक बेहतर, युक्तिसंगत और अनुकूल उपाय तलाशने तथा देश के सर्वाधिक पिछड़े हुए लोगों, जिसमें महिलाएं, दलित, जनजातीय लोग और अल्पसंख्यक शामिल हैं, को और बेहतर सेवा प्रदान करने में मदद मिलेगी। **आइए हम अपने अतीत पर एक नज़र डालें और भविष्य के बारे में पुनः विचार करें।**

आज जहाँ हम वर्तमान समय की राजनीतिक विषय सूची का मूल्यांकन एवं समीक्षा करने के लिए एकत्र हुए हैं, वहीं यह संतोष और हर्ष का विषय है कि एनसीपी अपनी स्थापना के दूसरे दशक में प्रवेश कर गया है। चुनाव से एनसीपी को आरंभ से ही राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा प्राप्त है और आज नौ राज्यों की विधानसभाओं में हमारी उपस्थिति है तथा तीन राज्यों, यथा महाराष्ट्र, गोवा और नागालैंड में हम वहां की सरकारों का हिस्सा हैं। हमारा विस्तार हो रहा है और साथ ही देश के विभिन्न भागों में हम अपना आधार और अधिक मजबूत बना रहे हैं। एनसीपी केन्द्र सरकार का एक जिम्मेदार सहयोगी है और एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और न्यायपूर्ण एवं समतावादी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। केन्द्र सरकार में हमारे मंत्री जनमुखी कार्यक्रमों के प्रति प्रतिबद्ध हैं और इस दिशा में कुशलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। केन्द्र सरकार में हमारे मंत्रियों के कार्यनिष्पादन और उपलब्धियों के बारे में मैं 20 दिसम्बर 2009 को दिल्ली में आयोजित अपने राष्ट्रीय अधिवेशन में दिए गए

भाषण में पहले ही बता चुका हूँ। अतः मैं वर्तमान और भविष्य के मुख्य मुद्दों तथा हमारी पार्टी के लिए इसके राजनीतिक एवं संगठनात्मक परिणामों पर बात करूंगा। लोगों और देश के विकास के लिए हमारे द्वारा किए गए कार्यों की बदौलत ही हम मतदाताओं का विश्वास हासिल कर पाए और लगातार तीसरी बार हम महाराष्ट्र में सरकार बनाने में सफल रहे।

प्रिय मित्रों, हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जहाँ पूरा विश्व सिमट कर एक वैश्विक गांव के रूप में परिवर्तित हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी में हुई क्रांति ने हमारी जिंदगी और दिनचर्या बदल कर रख दी है और **मैं यह हर्ष के साथ कहना चाहता हूँ कि यह परिवर्तन बेहतर के लिए हुआ है।** हमें इस बात का गर्व है कि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी उत्कृष्टता के कारण आज भारत ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है और वैश्विकरण के इस दौर में हमने पिछले एक दशक से 6 प्रतिशत से भी अधिक का औसत विकास दर कायम रखा है। विश्व के कुछ ही देश विकास दर को निरंतर बनाए रखने में सफल रहे हैं और यहां पर हम मेहनतकश भारतीयों ने दुनिया के सामने यह साबित किया है कि हममें प्रगति करने की अटूट इच्छा और दृढ़ता मौजूद है। **हमें बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए पूर्ण विश्वास के साथ प्रयास करना चाहिए क्योंकि कल हमारा है।**

वैश्विकरण के सकारात्मक पहलुओं का हम स्वागत करते हैं, किंतु विकासशील समाजों तथा एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के गरीब देशों पर विकसित देशों के नकारात्मक दबाव के कारण इन देशों की विकास यात्रा अत्यंत कठिन और चुनौतिपूर्ण हो गई है। कुछ महीने पहले संसद में दिए गए अपने वक्तव्यों में मैंने मूल्य वृद्धि की समस्या तथा इसके लिए जिम्मवार घटकों, पर्यावरण के क्षरण और बढ़ती हुई असमानता की समस्या पर चर्चा की थी, जो न केवल प्रतिव्यक्ति के रूप में, बल्कि कृषि, उद्योग और अर्थव्यवस्था में योगदान करने वाले विभिन्न अन्य सेवा क्षेत्रों के संदर्भ में भी था। पिछले एक वर्ष में देश को बढ़ती हुई कीमतों के भारी दबाव से गुजरना पड़ा। किंतु मुझे इस बात की खुशी है कि हमारे प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं और अधिकांश आवश्यक वस्तुओं की कीमतें न केवल स्थिर हुई हैं बल्कि उनमें कमी भी आ रही है। विकटतम परिस्थिति में भी हम अपनी सार्वजनिक वितरण प्रणाली और विभिन्न अन्य आपातकालीन उपायों के जरिए ये वस्तुएं आम लोगों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित कर सकते **हैं। भूखमरी और गरीबी के विरूद्ध हमारा संघर्ष जारी रहेगा।**

इस वर्ष बजट में ग्रामीण भारत को उचित महत्व दिया गया क्योंकि यह हमारे देश की रीढ़ है। समग्र विकास को बढ़ावा देने,

ग्रामीण आय में वृद्धि करने और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के हमारे संकल्प में कृषि क्षेत्र सर्वोपरि स्थान रखता है। वांछित परिणाम हासिल करने के लिए सरकार एक चहुमुखी कार्यनीति अपनाने का विचार रखती है, जिसमें कृषि उत्पादन, उत्पादों की क्षति में कमी, किसानों को ऋण सहायता तथा खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को महत्व दिया जाना शामिल है। कार्यनीति के अंतर्गत भंडार में होने वाली क्षति में कमी तथा वर्तमान खाद्य आपूर्ति श्रृंखला को सुचारू बनाने पर ध्यान देना शामिल है। हमें खेती स्तर के मूल्य, थोक ब्रिकी मूल्य और फुटकर मूल्य के बीच व्याप्त भारी अंतर को कम करने की योजना पर काम करना होगा। किसानों को ऋण देने में सुगमता आनी चाहिए और इस दिशा में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक कृषि ऋण के लिए निर्धारित लक्ष्य को लगातार पूरा कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में हमारे सक्रिय हस्तक्षेप के जरिए इस लक्ष्य को वर्तमान वर्ष में बढ़ाकर 3,25,000 करोड़ रूपया कर दिया गया है। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि हाल में कुछ राज्यों में आए सूखे तथा देश के कुछ भागों में भयंकर बाढ़ आने के मद्देनजर सरकार ने किसानों के लिए ऋण भुगतान करने की अवधि 31 दिसम्बर, 2009 से बढ़ाकर 30 जून, 2010 कर दी है।

प्रिय मित्रों, अब मैं हमारे आज और कल के समक्ष उत्पन्न कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर अपने विचार आपसे बांटना चाहता हूँ। एनसीपी

को इन चुनौतियों पर ध्यान देना होगा और अपनी शक्ति में वृद्धि और विस्तार के लिए आवश्यक राजनीतिक पहल करने होंगे। हम एक नए युग में हैं और हमें अपनी सोच बदलनी होगी। लोगों की समस्याओं, आकांक्षाओं और मांगों पर ध्यान देने के लिए हमें समग्र नीतिगत पहल करने की आवश्यकता है। एनसीपी किस प्रकार बदले हुए भारत के लिए अपना योगदान दे सकता है और किस प्रकार आम भारतीय के जीवन को बदल सकता है, यह हमारे लिए एक विचारणीय प्रश्न है। एक सच यह है कि आज विश्व ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का भी सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन और इसके परिणाम भावी विश्व राजनीति के मुख्य विषय होंगे और हमें इससे निपटने के लिए उपाय करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह ने कोपेनहेगन में हमारी चिंताओं को बिल्कुल सही तरीके से रखा। **एनसीपी विश्व को पहले से बेहतर बनाने में हर संभव सहायता देने तथा सिद्धांत और व्यवहार–दोनों में सतत विकास एवं समानता की संकल्पना को बढ़ावा देने का आश्वासन देती है।**

आतंकवाद एक अन्य अंतर्राष्ट्रीय समस्या है जिससे हमारा देश लंबे समय से प्रभावित है। मैं राष्ट्र के लोगों को नमन करता हूँ जिन्होंने लोगों के बीच दरार पैदा करने के आतंकवादियों के सभी मंसूबों पर पानी फेर दिया। महाराष्ट्र के लोग प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने हर आतंकी कार्रवाई का बहादुरी से सामना किया तथा

आतंकवाद को अपने जोश पर कभी भी हावी नहीं होने दिया। मैं महाराष्ट्र में तथा पूरे देश में आतंकवाद के घिनौने मंसूबे को मात देने की दिशा में काम करने का आप सबसे आग्रह करता हूँ। दक्षिण एशिया आतंकवादी गतिविधियों के प्रति एक संवेदनशील क्षेत्र है। अतः इस महाद्वीप के सभी देशों की यह सामूहिक जिम्मेवारी है कि वे आतंकवाद के खतरे का एकजुट होकर मुकाबला करें। **दक्षिण एशिया का भविष्य सहयोग में छिपा है।**

अस्तित्व में आने के समय से ही एनसीपी सामाजिक न्याय के प्रति समर्पित रहा है तथा यह हमारी नीतियों एवं कार्यक्रमों में प्रतिबिम्बित होता है। हमने महिला आरक्षण विधेयक को महत्वपूर्ण समर्थन प्रदान किया जो महिला अधिकारिता के हमारे स्वप्न से मेल खाता है। मैं महात्मा फूले को याद करना चाहूँगा जो भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति से अवगत थे तथा इस प्रकार उस महान समाज सुधारक ने जीवन के हर क्षेत्र में समानता का पक्ष लिया। लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सभी स्तरों पर महिलाओं की बढ़ती हुई प्रतिभागिता से हमारा वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य पूर्णतः बदल जाएगा। आज यह राष्ट्रीय बैठक एक महत्वपूर्ण समय में आयोजित हो रही है और हम एक पार्टी के रूप में ऐसा तंत्र तैयार करें जिससे कि सभी स्तर पर महिलाओं की हिस्सेदारी में वृद्धि हो।

एनसीपी कार्यकर्ताओं को लिंग भेद और लिंग संवेदनहीनता के खिलाफ लड़ाई लड़नी चाहिए।

एक राजनीतिक पार्टी के रूप में हमें देश की जनसांख्यिकीय तस्वीर में हो रहे परिवर्तन के राजनीतिक परिणामों को समझना और उस पर विचार करना चाहिए, जहां देश की आधी आबादी युवाओं की है। पिछले कुछ दशकों में हमारी साक्षरता दर बढ़ी है किंतु उच्च शिक्षा में प्रवेश का प्रतिशत बहुत कम अर्थात लगभग 10 प्रतिशत है जबकि चीन में यह 50 प्रतिशत से भी अधिक तथा प्रमुख विकसित देशों में 80 प्रतिशत से भी अधिक है। आज देश की युवा पीढ़ी विश्वास से ओत–प्रोत है और वह एक उज्जवल भविष्य के सपने संजोती है। एनसीपी को युवाओं की उम्मीदों पर ध्यान देना होगा। पार्टी की नीति और दृष्टिकोण में युवा भारत का सपना शामिल किया जाना चाहिए और युवाओं से जुड़े मामलों और समस्याओं के समाधान के लिए स्पष्ट उपाय किए जाने चाहिए। यह खुशी की बात है कि भारत की युवा पीढ़ी गैर–सांप्रदायिक भावना रखती है और वे धर्मनिरपेक्ष, संवेदनशील, प्रगतिशील और देश भक्त हैं। पार्टी संगठन में युवाओं को शामिल करने पर विशेष जोर देने की आवश्यकता है जो हमारे भविष्य की पूंजी होंगे।

मित्रों, बदली हुई परिस्थितियों में अभिशासन (गवर्नेंस) हर सरकार के लिए प्रमुख शब्द है। विकास 21वीं शदी के भारत का मुख्य राजनीतिक एजेंडा है। ऐसे राजनेता जो लोगों की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरते है, उन्हें वे अस्वीकार कर देते हैं। एनसीपी को रचनात्मक कार्यों और सेवाओं के माध्यम से लोगों की प्रशंसा और समर्थन हासिल करना जारी रखना चाहिए। हमें किसानों, कामगारों, मध्यम वर्ग और प्रबुद्ध वर्ग पर विशेष ध्यान देना चाहिए। याद रखिये कि पुरानी कहावतें और बातें अब उपयोगी साबित नहीं होंगी। केवल ज़मीनी स्तर पर आम लोगों के लिए काम करके ही हम राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी के उज्जवल भविष्य की कामना कर सकते हैं। हमें लोगों से किए गए वायदों को पूरा करना है। विचार मंथन एवं भविष्य के लिए कार्यनीति निर्माण के इन क्षेत्रों में हमें अपने संगठन की खामियों का विश्लेषण कर उन्हें ठीक करने का प्रयास करना चाहिए ।

विकास पर चर्चा करते समय, हमें ग्रामीण भारत पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा क्योंकि भारत गांवों में बसता है। एनसीपी, जिसकी जड़ें मूलतः गांवों में है, को ग्रामीण भारत में विकास को लेकर और अधिक जागरूक होने की जरूरत है। राष्ट्र एवं समाज इस तथ्य को स्वीकार किए बिना आगे नहीं बढ़ सकते कि सभी क्षेत्रों में विकास का समान वितरण ही किसी राष्ट्र में समृद्धि लाने की पूर्व

शर्त होती है। इसलिए, मैं एनसीपी के सभी नेताओं एवं कार्यकर्ताओं से ग्रामीण भारत के विकास कार्यक्रमों में न केवल सक्रिय भूमिका निभाने का आग्रह करता हूँ, अपितु ऐसा करते समय नवीन दृष्टिकोण अपनाने का भी आग्रह करता हूँ। इसका देश एवं दल दोनों पर दोहरा सकारात्मक असर होगा। अपने वर्तमान और भावी दृष्टिकोण में हमेशा आम भारतीय को याद करें। यहां पर मुझे महात्मा गांधी द्वारा कही गई एक बात याद आती है। उन्होंने कहा था ''मैं आपको एक मंत्र देना चाहता हूं। जब भी आप कभी संदेह में हैं या जब आपका स्वयं आप पर हावी होने लगे, तो यह जांच कर देखिये। आप किसी ऐसे सबसे निर्धन और कमजोर व्यक्ति के चेहरे को स्मरण कीजिए, जिसे आपने देखा हो और अपने आप से पूछकर देखिए कि जो कदम आप उठाने जा रहे हैं, क्या वह उसके लिए उपयोगी है ? क्या आपके उस कदम से उसको कोई लाभ होगा ? क्या वह उससे अपने जीवन और भाग्य में सुधार कर पाएगा। दूसरे शब्दों में क्या यह कदम स्वराज की स्थापना करने में सक्षम होगा ? फिर आप पाएंगे की आपके संदेह और स्वयं की भावना दूर होती जा रही है ''।

चूंकि हम एनसीपी के भविष्य पर विचार–विमर्श कर रहे हैं, अतः हमें कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को रेखांकित करने की ज़रूरत है। एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में हम अपनी जवाबदेही समझते हैं किंतु देश के विभिन्न भागों में विस्तार के लिए हमारे पास काफी गुंजाइश है। मैं

इस बात पर बल देना चाहूँगा कि पार्टी के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने आधार को सुदृढ़ करे तथा पूरे देश में इसका विस्तार करे। यद्यपि हमारी पार्टी छोटी है, किंतु यही एक ऐसी पार्टी है जिसमें अपनी आयु के हिसाब से 60 वर्ष के लोकतंत्र में एक नवीनता है। छोटा दल होने की अपनी सीमाएं होती हैं, किंतु अतीत से सबक लेने, वर्तमान पर उसे लागू करने तथा भविष्य की परिकल्पना करने का उसके पास अवसर होता है। हम हमेशा से यह मानते हैं कि भविष्य की पार्टी हम ही हैं। एक बेहतर कल में विजयी यात्रा में राजनीतिक और सामाजिक बदलाव की नई कहानी लिखनी होगी और पार्टी को एक नया संगठनात्मक रूप देना होगा। यहां पर हो रहे विचार विमर्श का उद्देश्य विकास के नए क्षेत्रों की पहचान करना होना चाहिए। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में हमें और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। आइए, हम एक नए भारत के निर्माण के लिए सुव्यवस्थित, ऊर्जावान और रचनाशील बने।

धन्यवाद!

जय हिंद।